विशेष संपादकीय

पहले पेज से आगे

अब लंगोट में गांठ कुछ अधिक मजबूती से लगाने की जरूरत

कर्नाटक के अखबारों में खुलासे यह खबर भी बन गई है कि यह चार मिनट बारह सेकंड की कौन सी पोर्नो-फिल्म है जो कि इन दिनों किस नाम से चारों तरफ फैली हुई है। इंटरनेट पर इसे देखकर हम भी आसानी से तय कर सकते हैं कि यह किसी पार्टी की फिल्म न होकर एक बंद कमरे की सेक्स फिल्म है। तीसरी गलती इस मंत्री की यह हुई कि उसने अपनी इस हरकत में कुछ भी गलत न होने की बात कही और इस्तीफे से इंकार कर दिया। इंटरनेट का आजाद मीडिया कर्नाटक विधानसभा के भीतर मंत्रियों की इस शर्मनाक हरकत को लेकर भरा हुआ है और पिछले साल भर से भारत के नेताओं के खिलाफ निकल रही लोगों की भड़ास को एक और मौका इससे मिला है।

कर्नाटक की राजनीतिक और सरकारी संस्कृति लंबे समय से लोगों की नफरत पा रही है। मुख्यमंत्री से लेकर दूसरे मंत्रियों तक ने सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी को ऐसी बदनामी दिलाई है जैसी कि भाजपा के इतिहास में किसी दूसरे राज्य में पार्टी को कभी नहीं मिली थी। लेकिन चौराहे पर बांधे गए इन गुनहगारों पर कुछ और पत्थर चलाने के साथ-साथ आज हम यहां यह भी बात उठाना चाहेंगे कि क्या एक नंगी फिल्म ही इस देश के लोगों को इस कदर विचलित करेगी? इसी कर्नाटक में सोलह हजार करोड़ रूपए का लौह खनिज घोटाला वहां के लोकायुक्त जस्टिस संतोष हेगड़े ने सामने रखा है। इसी कर्नाटक में सोने की खदान वाले इलाके हैं और उन्हीं इलाकों में एक-दो बरस में कई हजार बच्चों के कुपोषण से मर जाने के तथ्य इसी भाजपाई राज्य सरकार की एक रिपोर्ट में है, अपने ही कार्यकाल के बारे में। हमारा मानना है कि भूखे, दम तोड़ते बदन देखते हुए जनता की दौलत को हजारों-लाखों करोड़ लूटना कहीं अधिक अश्लील, हिंसक और अनैतिक, अपराध है। ऐसी तमाम नौबत के चलते हुए भी कर्नाटक में कभी इस रफ्तार से इस्तीफे नहीं हो पाए थे और पिछले मुख्यमंत्री येदियुरप्पा और उनके खरबपति लोहा चोर मंत्री रेड्डी बंधु कुर्सियों से इस तरह चिपके हुए थे कि मानो वे इंसान न होकर अचार बनाने वाले लसूड़े हों।

कल की यह घटना हमें अधिक विचलित इसलिए भी कर रही है क्योंकि इसमें फंसने वाले मंत्री जो कि सदन में चल रही गंभीर बहस के दौरान सेक्स फिल्म देख रहे थे उनमें कर्नाटक के महिला और बाल विकास मंत्री सी.सी. पाटिल भी शामिल हैं। पाटिल का ही वह विभाग है जो कर्नाटक में कुपोषण से मरने वाले हजारों बच्चों के लिए जिम्मेदार है और सदन में चलती गंभीर बहस के दौरान वे सेक्स का मजा ले रहे थे। जाहिर है कि ऐसे राज्य में बच्चों का मरना तो होना ही था। पाठकों को यह भी याद दिलाना मुनासिब होगा कि पिछले दिनों इसी मंत्री ने एक बयान दिया था कि महिलाएं जब उत्तेजक कपड़े पहनती हैं तो बलात्कार और सेक्स हमलों का कारण बन जाती हैं। उन्होंने महिलाओं से कहा था कि वे अपना बदन कितना उघाड़ें इस बारे में उन्हें सोचना चाहिए। इसी कर्नाटक में बच्चों के अधिकारों को लेकर और बाल मजदूरी के खिलाफ साठ से अधिक जनसंगठन काम कर रहे हैं और वहां पर बच्चों की हालत, सोने और लोहे की खदानों के बावजूद बहुत बुरी बताई जा रही है।

जिस समय विधानसभा में इस बात को लेकर बहस चल रही थी कि वहां किस तरह कुछ लोगों ने पाकिस्तानी झंडा फहराकर साम्प्रदायिक दंगा फैलाने की कोशिश की, और किस तरह वहां की भाजपा सरकार की पुलिस ने ही श्रीराम सेना नाम के एक बहुत आक्रामक और हमलावर, हिंसक और साम्प्रदायिक संगठन के लोगों को गिरफ्तार किया है, उस वक्त यह मंत्री सेक्स के मजे ले रहा था। वैसे तो पोर्नोग्राफी की एक फिल्म देखने के लिए तीन मंत्रियों की कुर्सियां ऐसे कमाऊ प्रदेश में चले जाना छोटी बात नहीं है, लेकिन जो विधानसभा अपने सदस्यों को इतने विशेषाधिकार देती है उनका जरा सा अपमान होने पर भी, उनकी अनदेखी होने पर भी किसी भी अफसर या नागरिक को कटघरे में खड़ा किया जा सकता है, जेल भेजा जा सकता है, वहां पर बैठकर यह काम करना भारतीय लोकतंत्र में बहुत ही शर्मनाक माना जा रहा है। देश भर में इसे लेकर लोगों के मुंह का स्वाद बिगड़ गया है।

भारतीय संसद और देश की विधानसभाओं को लेकर एक बहस पहले से चल रही है कि इनके विशेषाधिकारों को कुछ कम नहीं किया जाए? अदालत की अवमानना और सदन के विशेषाधिकार लोगों को उनके काम की जरूरतों के मुकाबले बहुत अधिक लगते हैं। हमारा भी यही ख्याल है कि लोकतंत्र की इन दोनों शाखाओं को ऐसी किसी पवित्रता-आधारित रियायत की जरूरत नहीं है। और यहां के कामकाज को जनता के प्रति अधिक हद तक जवाबदेह होना भी चाहिए। कल कर्नाटक की राजधानी में इस फिल्म-प्रेमी मंत्री के घर पर पथराव भी हुआ, और कर्नाटक के बाहर बैठे बहुत से और लोगों के मन में भी ऐसी हसरत जरूर हुई होगी। इससे भारत के तमाम लोगों को सावधान हो जाने की जरूरत है कि अब टेक्नॉलॉजी की घुसपैठ निजी जिंदगी में इतनी अधिक हो गई है कि आपके हाथ के भीतर छुपे हुए फोन की स्क्रीन को सिर्फ आप नहीं देखते, ऊंची छत पर लगा कैमरा भी देख लेता है और कैद करके आनन-फानन दुनिया भर को दिखा देता है। हमारे पाठकों को याद होगा कि हम इस अखबार में 'छोटी सी बात' में लगातार यह लिखते हैं कि आप अपने फोन पर से आपत्तिजनक फिल्में या संदेश हटाते चलें। हम तो इस बात को फोन गुम जाने या बच्चों के हाथ लग जाने के सिलसिले में कहते रहते हैं, लेकिन विधानसभा में बैठा मंत्री साम्प्रदायिकता की साजिश पर चर्चा को सुनने के बजाय अगर वयस्क मनोरंजन की उत्तेजना अधिक जरूरी पा रहा है, तो अब लोगों को लंगोट में गांठ कुछ अधिक मजबूती से लगाने की जरूरत है। तन और मन दोनों की लंगोट में।

sunil kumar on twitter

* indian parliament should reconsider use of ipads by MPs :-), or it should raise safety level to max, no flesh, no skin, child safety level.

* karnataka just paid costliest price 4 erections. in uttar pradesh erecting elephants was cheaper.

* karnataka minister explained, it was not intercourse porno, it was yeddi and reddy with the state....

*karnataka minister seen turning porno mobile to see the backside of it, probably trying to see the other side of the female body..

*karnataka ministers watching porno in assembly is less vulgar than watching kids dying of malnutrition, and red-dys-yeddys looting state.

* Why gadkari's stage collapsed? He was told about his ministers watching porno in asosembly. He screamed-hey dhartee tu fat jaa...

राष्ट्रीय शर्म के पर्व में एक और विनम्र योगदान

■ अरुण कान्त शुक्ला

देश में राष्ट्रीय शर्म का पर्व चल रहा हो और देश, संस्कृति और सभ्यता की सबसे अधिक बात करने वाली पार्टी का उसमें योगदान न हो, ऐसा कैसे हो सकता है। कर्नाटक में पहले राज्य सरकार के पर्यटन विभाग ने उडुपी में पर्यटन को विकसित करने के नाम पर जिस अश्लीलता को हो जाने दिया और फिर उसी राज्य सरकार के मंत्री लक्ष्मण सवादी और सीसी पाटिल का विधानसभा के अंदर पॉर्न वीडियो मोबाईल में देखते हुए पाया जाना, राष्ट्रीय शर्म के पुनीत पर्व में विनम्र योगदान माना जाना चाहिए।

दरअसल, हमारे देश के राजनीतिज्ञों ने योग्यता का वो स्तर हासिल कर लिया है कि वो देश को शर्मसार करने का कोई भी अवसर नहीं चूकते। और फिर देशवासियों की तरफ पलटकर इस तरह देखते हैं, मानो कह रहे हों, देखो, हमने कर दिखाया न! मेरी बात हो सकता है, कुछ लोगों को बहुत कडुवी लगे, पर आज के दौर की सच्चाई यही है। उडूपी में हुई रेव पार्टी, जिसका वीडियो न्यूज चैनल पर जारी हो चुका है और उसे अभी तक आधा हिन्दुस्तान देख चुका होगा, उसके बारे में कर्नाटक के मुख्यमंत्री और उडूपी के जिला प्रशासन का यह कहना कि वहाँ कोई अश्लीलता नहीं हुई और लक्ष्मण सवादी का यह कहना कि उनके मोबाईल पर वह गेंगरेप का वीडियो देख रहे थे, जो इंडिया का नहीं था और साथी मंत्री से चर्चा कर रहे थे कि रेव पार्टी में ऐसा भी हो सकता था, बताता है कि राष्ट्रीय शर्म इस देश के नागरिकों के लिए ही है, भारत के राजनीतिज्ञों के लिए वह कुछ नहीं है।

किसी भी देश में राजनीतिज्ञों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे देश वासियों के सामने मौजूद समस्याओं और उनके निराकरण के मध्य एक सेतु का काम करेंगे और समाज के अंदर स्वच्छता बनाने के लिए यथासंभव प्रयत्न करते हुए, समाज के महत्वपूर्ण अंग व्यक्ति को स्वच्छ समाज के योग्य बनाने में अपना योगदान देंगे। हमारे देश का राजनीतिक समुदाय, छोटे से वामपंथी धड़े को छोड़कर, इस अपेक्षा पर खरा तो उतरा ही नहीं है, बल्कि उसने, देश की राजनीतिक व्यवस्था को ही पूरी तरह ढहाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

> हमारे देश के राजनीतिज्ञों ने योग्यता का वो स्तर हासिल कर लिया है कि वो देश को शर्मसार करने का कोई भी अवसर नहीं चूकते। और फिर देश वासियों की तरफ पलटकर इस तरह देखते हैं, मानो कह रहे हों, देखो, हमने कर दिखाया न! मेरी बात हो सकता है, कुछ लोगों को बहुत कडुवी लगे, पर आज के दौर की सच्चाई यही है। उडूपी में हुई रेव पार्टी, जिसका वीडियो न्यूज चैनल पर जारी हो।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक की शुरुवात में आज के प्रधानमंत्री के वित्तमंत्रित्व में ही भारतीय राजनीति में विश्वबैंक और आईएमएफ के दखल में उदारीकरण की उन नीतियों पर चलना शुरू हुआ, जहां राजनीति का मकसद बदलकर देश की जनता को कुछ 'देने' की बजाय सब कुछ 'छीन' लेना हो गया। इसका परिणाम हम देख रहे हैं कि दुनिया के सबसे ज्यादा कुपोषित भारत में हैं और उन्हीं वित्तमंत्री को प्रधानमंत्री के रूप में यह कहना पड़ा कि यह राष्ट्रीय शर्म का विषय है। क्या कुपोषण ही एकमात्र विषय है, जिस पर हमें शर्म करनी चाहिए?

नहीं, सबसे ज्यादा गरीब भी हमारे ही मुल्क में रहते हैं। बेरोजगारी की दर हमारे यहाँ किसी भी और मुल्क से ज्यादा है। भ्रष्टाचार में हम दुनिया में अव्वल हैं। स्विस बैंकों में दुनिया के किसी भी देश से ज्यादा पैसा काले धन के रूप में हमारा ही जमा है। जिस अमरीका की दोस्ती पर मनमोहनसिंह गदगदायमान रहते हैं, वहाँ का एक अदना सा सब इन्सपेक्टर रेंक का आफिसर हमारे देश के रक्षामंत्री से लेकर पूर्व राष्ट्रपति तक की नंगा झोली ले लेता है और हम हर बार, अबकी बार किया तो किया, अगली बार करना तब बताऊंगा की मुद्रा में रहते हैं।

पर, मुझे लगता है कि राष्ट्रीय शर्म का विषय इनमें से कोई भी नहीं है। राष्ट्रीय शर्म का विषय यह है कि देश के राजनीतिक दल और राजनीतिज्ञ सत्ता के मद में अंधे होकर 2000 वर्ष पूर्व के रोमन शासकों से भी गया बीता व्यवहार कर रहे हैं। रोम के शासक वर्ग ने रोम के संसाधनों और रोम की जनता को लूटकर अपना जीवन इतना संपन्न कर लिया था कि नैतिकता, निष्ठा, सच्चाई और ईमान उनको उनकी ऐय्याशी के रास्ते में रोड़ा लगते थे और उन्होंने उस चौगे को उतार फेंका था। पिछले दो दशकों में हमारे देश के राजनीतिज्ञों और संपन्नों ने भी देश की संपदा और संसाधनों को लूटकर बहुत संपत्ति अर्जित की है और अब वो ऐय्याशी के रास्ते पर बढ़ना चाहते हैं और नैतिकता, निष्ठा, सच्चाई और ईमान का चौंगा उतार फेंकने के अलावा कोई और विकल्प अब उनके सामने नहीं है। वे, यही कर रहे हैं। पर, भारत 2000 वर्ष पूर्व का रोम नहीं है और भारत में रहने वाला आम आदमी रोमन नहीं है, वे यह न भूलें।

मैं पाकिस्तान में मर्द पैदा होना नहीं चाहती

■ साएमा इकबाल

अपनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'सेविंग फेस' के लिए ऑस्कर नामांकन पाने वाली पहली पाकिस्तानी नागरिक शरमीन ओबेद चिनॉय कहती हैं कि अगर अपने देश में वो एक मर्द पैदा हुई होती तो कभी वो ये काम नहीं कर सकती थी जो वो कर रही हैं। शरमीन की डॉक्यूमेंट्री 'सेविंग फेस' पाकिस्तान में चेहरे पर तेजाब फेंकने की घटना का शिकार हुई औरतों की कहानी है। 'सेविंग फेस' के अलवा शरमीन अफगानिस्तान में रह रही महिलाओं की स्थिति पर भी फिल्म बना चुकी हैं। तो पाकिस्तान और अफगानिस्तान जैसे देशों में औरतों से जुड़े संवेदनशील मुद्दों पर फिल्म बनाना मुश्किल नहीं रहा शरमीन के लिए?

इस सवाल का जवाब देते हुए शरमीन कहती हैं, अगर मैं पाकिस्तान में मर्द पैदा हुई होती तो आज जो काम मैं कर रही हूं वो नहीं कर सकती थी। मैं एक औरत हूं इसलिए समाज में मेरे लिए एक जगह है जहां रह कर मैं अपना काम कर सकती हूं। मेरा औरत होना मेरे लिए फायदेमंद रहा और मैं कभी नहीं चाहूंगी कि मैं पाकिस्तान में मर्द के रूप में जन्म लूं, मैं तो औरत ही ठीक हूं।

क्यों कह रही हैं शरमीन ऐसी बात, क्या फायद हुआ उन्हें अपने औरत होने का? शरमीन कहती हैं, जिस तरह की कहानियों पर मैं काम करती हूं उसकी वजह से मुझे दूसरी औरतों के साथ काफी वक्त बिताना पड़ता है, उनके घरों में रहना भी पड़ता है ताकि मैं उनके हालात बेहतर तरीके से समझ सकूं। जिस तरह का हमारा समाज है उसमें गैर मर्द का किसी औरत के साथ उठना-बैठना, उसके घर जाकर रहना सही नहीं माना जाता। तो अगर मैं मर्द होती तो मैं ऐसी फिल्में बना ही नहीं सकती थी।' सेविंग फेस' पर रोशनी डालते हुए शरमीन ने बीबीसी को बताया, पाकिस्तान स्थित पंजाब में तेजाब बहुत आसानी से मिल जाता है क्योंकि रुई को साफ करने के लिए वहां तेजाब का इस्तेमाल किया जाता है। वहां छोटी-छोटी बातों पर भी मर्द औरतों पर तेजाब फेक देते हैं। इसकी एक वजह शिक्षा की कमी भी है, ऊपर से इनके पास काम नहीं है और सोच ऐसी है कि औरत पर जुल्म करना ठीक है। 'सेविंग फेस' कहानी है दो औरतों की जिन पर तेजाब फेका गया था। इनमें से एक औरत अपने साथ हुए अन्याय के लिए लड़ी। उसने एक महिला वकील और कुछ महिला सांसदों के साथ मिलकर गवाही दी और लड़कर सिस्टम को बदला।शरमीन कहती हैं कि उनकी फिल्म की कहानी से पता चलता है कि अगर पाकिस्तान चाहे तो अपने मसले खुद हल कर सकता है। साथ ही वो ये भी कहती हैं कि अगर शिक्षित औरतें अशिक्षित औरतों की मदद करें तो ऐसा कोई मसला नहीं है जिसका हल न ढूंढा जा सकता हो।शरमीन कहती हैं भले ही 'सेविंग फेस' तेजाब की कहानी हो लेकिन ये उम्मीद की भी कहानी है। शरमीन एक पत्रकार भी रह चुकी हैं। उन्होंने बताया कि आज तक उन्होंने उसी तरह की कहानियां की हैं जिन्हें करने से अमूमन लोग डरते हैं, यहां तक कि लोग उन मुद्दों का जिक्र भी नहीं करना चाहते। वो कहती हैं कि जरूरी है कि पढ़े लिखे लोग ऐसी गंभीर बातों के बारे में चर्चा करें ताकि बदलाव आए और समाज बेहतर बने।शरमीन चाहती हैं कि वो तब्दीली लाएं, तो क्या हमेशा ही उन्हें अपने आस-पास के लोगों से ऐसा करने के लिए प्रोत्साहन मिला या फिर कभी किसी ने उनके हौसलों को तोड़ने की कोशिश भी की?

इस सवाल के जवाब में शरमीन कहती हैं, मेरा बस एक ही मकसद है कि मुझे बदलाव लाना है फिर इस काम में किसी भी तरह की आवाज आए, कोई कुछ भी कहे मुझे फर्क नहीं पड़ता। मैं उन्हीं लोगों की बातें सुनती हूं जिनकी बातें मुझे सुननी हैं। बहुत आसान होता है कहना कि ये मत करो वो मत करों पर उतना ही मुश्किल होता है वो काम करना जिससे सुधार आए।

(बाकी पेज 11 पर)

जंगल में हस्तक्षेप से बाज आएं

■ डॉ. आशीष वशिष्ठ

वन्य प्राणियों के गांवों एवं शहरों में प्रवेश, खेती-पालतू पशुओं को नुकसान पहुंचाने और मनुष्यों पर घातक हमला करने की घटनाएं देश भर में भी बढ़ रही हैं। वन क्षेत्रों के निकट के गांवों एवं कस्बों में ऐसी घटनाएं आए दिन हो रही हैं। वनों में रहने वाले बंदर जब-तब गांव और शहर में झुंड बनाकर हमले करने लगे हैं। इसी तरह बाघ, रीछ, नीलगाय, सियार, लकड़बग्गे और हिरण आदि पशु भी गांव पर धावा बोलने लगे हैं। मांसाहारी पशु तो बहुत बुरी हालत में हैं। वनों में वन्य प्राणियों की कमी के कारण मांसाहारी पशु अब गांव में लोगों के पालतू पशुओं को खाने लगे हैं। इसके लिए वे रात के समय धावा बोलते हैं। अगर पिछले एक दशक में जंगली जानवरों के हमलों में घायल और मृत लोगों और मवेशियों का आंकड़ा हजारों में होगा, वहीं इंसान और जानवर के टकराव से फसल, प्राकृतिक संसाधनों और दूसरे नुकसान का हिसाब-किताब करोड़ों में होगा।

उत्तरप्रदेश के पूरे तराई क्षेत्र का जंगल हो अथवा उत्तरांचल का वनक्षेत्र हो, उसमें से बाहर निकले बाध चारों तरफ अपना आतंक फैलाए हैं और बेकसूर ग्रामीण उनका निवाला बन रहे हैं। जंगली जानवरों और मानव के बीच संधर्ष क्यो बढ़ रहा है? और जंगली जानवर जंगल के बाहर निकलने के लिए क्यों बिवश हैं? इस विकट समस्या का समय रहते समाधान किया जाना आवश्यक है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड की भांति छत्तीसगढ़, झारखण्ड, असम, राजस्थान और देश के दूसरे राज्यों में वनक्षेत्र के समीप बसे क्षेत्रों से जंगली जानवरों की घुसपैठ और हमले की खबरें आती रहती हैं। उत्तर प्रदेश के पूरे तराई क्षेत्र का जंगल हो अथवा उत्तरांचल का वनक्षेत्र हो, उसमें से बाहर निकले बाध चारों तरफ अपना आतंक फैलाए हैं और बेकसूर ग्रामीण उनका निवाला बन रहे हैं। इन दिनों सूबे की राजधानी लखनऊ की शहरी सीमा में एक बाघ के आमद ने वन विभाग और राजधानीवासियों की नींद हराम कर रखी है।

वन विशेषज्ञों के अनुसार मानवजनित अथवा प्राकृतिक परिस्थितियां मानव पर हमला करने को विवश करती हैं। जब कभी बाहुल्य क्षेत्रफल में जंगल थे तब मानव और वन्यजीव दोनों अपनी-अपनी सीमाओं में सुरक्षित रहे, समय बदला और आबादी बढ़ी फिर किया जाने लगा वनों का अंधाधुंध विनाश। जिसका परिणाम यह निकला कि जंगलों का दायरा सिमटने लगा, वन्यजीव बाहर भागे और उसके बाद शुरू हुआ न खत्म होने वाला मानव और वन्य पशुओं के बीच का संघर्ष। बाघ अथवा वन्यजीव जंगल से क्यों निकलते हैं इसके लिए प्राकृतिक एवं मानवजनित कई कारण हैं। इनमें छोटे-मोटे स्वार्थों के कारण न केवल जंगल काटे गए बल्कि जंगली जानवरों का भरपूर शिकार किया गया। आज भी नेशनल पार्क का आरक्षित वनक्षेत्र हो या संरक्षित जंगल हो उनमें लगातार अवैध शिकार जारी है। यही कारण है कि वन्यजीवों की तमाम प्रजातियां संकटापन्न होकर विलुप्त होने की कगार पर हैं। इस बात का अभी अंदेशा भर जताया जा सकता है कि इस इलाके में बाघों की संख्या बढ़ने पर उनके लिए भोजन का संकट आया हो। असामान्य व्यवहार आसपास के लोगों के लिए खतरे की घंटी हो सकता है। मगर इससे भी बड़ा खतरा इस बात का है कि कहीं मनुष्यों और जंगली जानवर के बीच अपने को जिंदा रखने के लिए खाने की जद्दोजेहाद नए सिरे से किसी परिस्थितिकीय असंतुलन को न पैदा कर दे।

गौरतलब है कि जब तक भरपूर मात्रा में जंगल रहे तब तक वन्य जीव गांव या शहर की ओर रूख नहीं करते थे। लेकिन मनुष्य ने जब उनके ठिकानों पर हमला बोल दिया तो वे मजबूर होकर इधर-उधर भटकने को मजबूर हो गए हैं। इधर प्राकृतिक कारणों से जंगल के भीतर चारागाह भी सिमट गए अथवा वन विभाग के कर्मचारियों की निजस्वार्थपरता से हुए कुप्रबंधन के कारण चारागाह ऊंची घास के मैदानों में बदल गए। परिणाम स्वरूप वनस्पति आहारी वन्यजीव चारा की तलाश में जंगल के बाहर आते हैं तो अपनी भूख शांत करने के लिए वनराज बाघ भी उनके साथ पीछे-पीछे बाहर आकर आसान शिकार की प्रत्याशा में गन्ने के खेतों को अस्थाई शरणगाह बना लेते हैं। (बाकी पेज 11 पर)

काँव-काँव

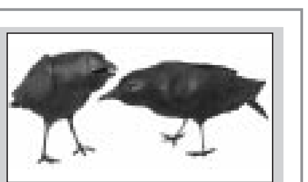

■ तुम एयरपोर्ट की तरफ क्यों जा रहे हो?

■■ मैं बंगलोर के प्लेन में बैठ जाऊंगा। वहां विधानसभा के भीतर छत पर घोंसला बना रहा हूं।

चौपाल

गुड़ खाए गुलगुलों से परहेज

बाल ठाकरे ने पुत्रमोह में योग्य होते हुए भी राज ठाकरे को अपना उत्तराधिकारी नहीं बनाया। शिवसेना को संभाल रहे हैं उद्धव ठाकरे। नतीजा परिवार और पार्टी विघटन। राज ठाकरे ने अपनी नई पार्टी बना ली महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे)। इसका खामियाजा हालांकि दोनों को ही भुगतना पड़ रहा है। दोनों की ताकत बंट गई। ताकत बंटने पर हानि ही होती है। उधर, उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी का मुखिया बनने के कई योग्य दावेदार हैं लेकिन पार्टी की कमान मिली मुलायम यादव के बेटे अखलेश यादव को। कोई भी परिवार सत्ता विमुख नहीं होना चाहता। बड़े नेता किसी भी कीमत पर पद से या तो खुद चिपके रहते हैं या फिर अपने आत्मीय को वहां सुशोभित कर देते हैं।

उत्तर प्रदेश में चुनावी घमासान चल रहा है। प्रचार जोरों पर है। प्रियंका वाड्रा कांग्रेस और राहुल गांधी के समर्थन में रायबरेली और अमेठी में जमकर चुनाव प्रचार कर रहीं हैं। उनको देखने और सुनने हजारों की तादात में भीड़ पहुंच रही है। उनकी लोकप्रियता को देखकर उनके पति रॉबर्ट वाड्रा का मन राजनीति में कूदने का होता है। 6 फरवरी को वे प्रियंका के साथ प्रचार करने पहुंचे। यहां उन्होंने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि जनता चाहेगी तो वे भी राजनीति में आने को तैयार हैं। वे चुनाव लड़ना चाहते हैं। जब पत्रकारों ने राबर्ट से सवाल किया कि प्रियंका क्या हमेशा प्रचार ही करती रहेंगी या चुनाव भी लड़ेंगी? जवाब में रॉबर्ट ने कहा कि हर चीज का वक्त होता है। सब कुछ समय आने पर ही होता है। अभी प्रियंका का राजनीति में आने का वक्त नहीं है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि अभी राहुल गांधी का वक्त चल रहा है। आगे प्रियंका का भी वक्त आएगा, रॉबर्ट वाड्रा के इस बयान को आधा दिन भी नहीं बीता था कि प्रियंका को खुद इसका खंडन करना पड़ा। उन्होंने कहा कि उनके पति व्यवसाय में बहुत खुश हैं वे राजनीति में नहीं आएंगे। जरूर पत्रकारों ने कोई आड़ा-टेड़ा सवाल किया होगा तभी उनके मुंह से उक्त बयान निकल गया होगा।

एक यक्ष प्रश्न है। इसके उत्तर की खोज करने पर भी संभवत: स्पष्ट हो जाएगा कि यह सच है कि सोनिया गांधी अपनी बेटी प्रियंका वाड्रा (जो अब गांधी नहीं रही) संसद में कभी प्रवेश नहीं करने देंगी। संसद में प्रवेश कर भी लिया तो कांग्रेस में कोई बड़ी जिम्मेदारी नहीं दी जाएगी। यक्ष प्रश्न यह है कि जब प्रत्येक पार्टी एक-एक सीट जीतने के लिए गुंडा, बदमाश, दागी उम्मीदवारों को भी टिकट बांट रहीं हैं ऐसे में एक साफ-सुथरी छवि और निश्चित विजय प्राप्त करने वाली उम्मीदवार को टिकट क्यों नहीं दिया जाता? उससे महज प्रचार ही क्यों कराया जा रहा है? कुछ लोग कह सकते हैं राजनीति में गंदगी है इसलिए सोनिया गांधी अपनी बेटी को राजनीति से दूर ही रखना चाहती हैं।

-लोकेन्द्र सिंह

दिल से

I was smiling yesterday, I am smiling today and I will smile tomorrow simply because life is too short to cry for anything.

Sometimes someone has to make us cry, just to make us realize that we deserve someone better that can make us smile.

एक ग़ज़ल गुनगुनाएं

कुछ इश्क़ था कुछ मजबूरी थी सो मैंने जीवन वार दिया
मैं कैसा ज़िन्दा आदमी था इक शख़्स ने मुझ को मार दिया

ये सजा-सजाया घर साक़ी मेरी ज़ात नहीं मेरा हाल नहीं
ऐ काश कभी तुम जान सको जो उस सुख ने आज़ार दिया

मैं खुली हुई इक सच्चाई मुझे जानने वाले जानते हैं
मैं ने किन लोगों से नफ़रत की और किन लोगों से प्यार किया

वो इश्क़ बहुत मुश्किल था मगर आसान न था यूँ जीना भी
उस इश्क़ ने ज़िन्दा रहने का मुझे ज़र्फ़ दिया पिन्दार दिया

इक सब्ज़ शाख़ गुलाब की था इक दुनिया अपने प्यार की था
वो एक बहार जो आई नहीं उस के लिए सब कुछ हार दिया

मैं रोता हूँ और आस्मान से तारे टूटते देखता हूँ
उन लोगों पर जिन लोगों ने मेरे लोगों को आज़ार दिया

वो यार हों या महबूब मेरे या कभी कभी मिलने वाले
इक लज़्ज़त सब के मिलने में वो ज़ख़्म दिया या प्यार दिया

-ओबैदुल्लाह अलीम

दीवारों पर लिक्खा है...

अपनी मूर्खता
का इस्तेमाल
विशेषाधिकार तो है,
मजबूरी नहीं ...

© www.dailychhattisgarh.com